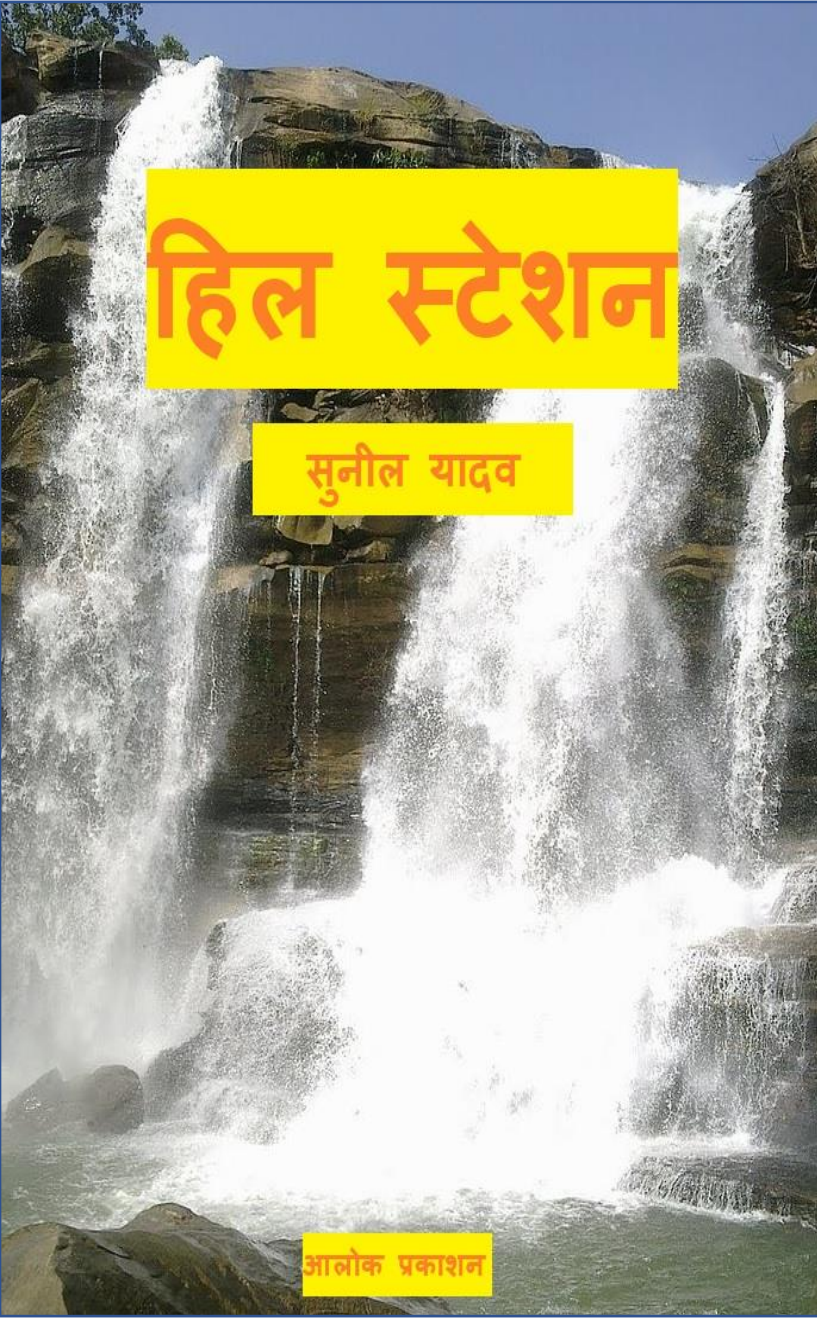
हिल स्टेशन
सुनील यादव
आलोक प्रकाशन

हिल स्टेशन

सुनील यादव

C - सुनील यादव - 2021

आलोक प्रकाशन

समर्पित

मेरे अराध्य श्री कृष्णा को

लेखक की कलम से

चिरमिरी एक खूबसूरत हिल स्टेशन है।

यह किताब चिरमिरी की सुंदरता का बखान करती हैं यह केवल किताब ही नहीं बल्कि एक गाइड है जोकि चिरमिरी के पर्यटन स्थलों को बखूबी बताता है घूमने तो आओ चिरमिरी के खानों में यह वाक्य जताता है।

चिरमिरी को मैंने व्यक्तिगत घूमा है एवं कई वर्षों तक चिरमिरी में निवास किया है इसलिए मैं चिरमिरी के सुंदरता को बखूबी

जानता हूं और जैसे मैंने देखा है वैसे ही अक्षर से इस किताब में आपको बता रहा हूं।

सुनील यादव

अनुक्रम

चिरमिरी: एक परिचय.....1

अमृतधारा जलप्रपात.....6

श्री जगन्नाथ मंदिर.....9

कोयला खदान.....12

नीलम सरोवर पार्क.....16

दशहरा.....19

माता महामाया मन्दिर.....23

शासकीय लाहिड़ी स्नातकोत्तर महाविद्यालय.....26

सरभोक्का जलाशय.....31

बहरूपिया प्रतियोगिता.....33

तुर्रा.....38

चिरमिरी: एक परिचय

चिरमिरी शब्द चिरमिली का अपभ्रंश है।चिरमिरी का शाब्दिक अर्थ है- "चिर कर मिलने वाला" अर्थात कोयला। चिरमिरी कोयला से परिपूर्ण क्षेत्र है। यहाँ शिमला जैसी ठंड और अरूणाचल प्रदेश जैसा जंगल है। मध्यप्रदेश जैसा

जंगली जानवर तो कन्याकुमारी जैसे झरने हैं। विभिन्न जाति-धर्मों के लोगो

के निवास स्थान चिरमिरी को मिनी इंडिया कहा जाता है। कोयला खदानों की भव्यता और प्राकृतिक सुंदरता पर्यटकों को चिरिमिरी आने हेतु आकर्षित करते हैं। कुछ लोग तो इसे चिरिमिरी जन्नत भी कहते हैं।

चिरिमिरी का जगन्नाथ मंदिर ओडिशा के पुरी में स्थित जगन्नाथ मंदिर की रेप्लिका है। भव्य जल संग्रहण का उदाहरण सरभोका जलाशय, सदा बहने वाली प्राकृतिक पेय जल की स्रोत तुर्रा अतुलनीय है। चिरिमिरी का नीलम सरोवर पार्क आपके मन को मोह लेगा। चिरमिरी के हृदय स्थल हल्दी बाड़ी के काली बाड़ी में स्थित प्राचीन काली मंदिर एवं हीरागिर के पर्वत में स्थित प्राचीन शिव मंदिर अभी भी आस्था का पर्याय बने हुए हैं।

लाहिड़ी पी जी महाविद्यालय चिरमिरी, छत्तीसगढ़ में रायपुर के

राजकुमार कॉलेज के बाद दूसरा सबसे प्रचीन महाविद्यालय है जिसकी स्थापना 1953 में हुई थी।

पश्चिम बंगाल की तर्ज पर आपको चिरिमिरी में भी दुर्गा पूजा की भव्यता देखने को मिलेगी।

चिरिमिरी के नागपुर से लगभग 10 किलोमीटर की दूरी पर अमृत के समान बहने वाली अमृत धारा स्थित है जो कि पर्यटन का प्रमुख केंद्र है।

अमृतधारा जलप्रपात

अमृतधारा जलप्रपात बरबसपुर में स्थित है। इसकी दूरी चिरमिरी से 17 किलोमीटर है। चिरिमिरी से अमृतधारा जलप्रपात तक की यात्रा मन को अभिभूत करने वाला है। यह जलप्रपात सोनहत की पहाड़ी पर प्रकृति के गोद मे स्थित है, मानो कोई अमृत छिपाया गया हो

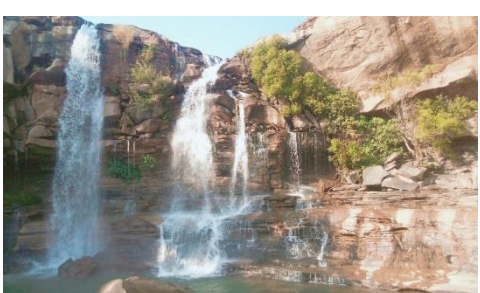

इस प्रकार अमृतधारा जलप्रपात नाम यथार्थ होता है।

अमृतधारा जलप्रपात हसदेव नदी का उद्‌गम स्थल है। यह मनमोहक स्थल पिकनिक के लिये प्रख्यात है। अक्टूबर से मार्च का माह पिकनिक के आने वालों की बहुत भीड़ होती है। इस समय हजारों लोग यहाँ पिकनिक मनाने आते है और गिरते झरने का आनंद उठाते

हैं। पर्यटकों की सुविधा के लिए जिला प्रशासन द्वारा जलप्रपात के समीप कैंटीन, पार्क, लॉज,टैक्सी स्टैंड, दुकानों आदि की व्यवस्था की है।सुरक्षा के लिए पुलिस उपस्थित रहती है।रात में अंधेरा दूर करने प्रकाश की भी व्यवस्था है।

स्थानीय प्रशासन के द्वारा यहाँ अमृतधारा महोत्सव का आयोजन किया जाता है, जिसमें रंगा रंग कार्यक्रम होता है छत्तीसगढ़ी कलाकार अपनी मनमोहक प्रस्तुति देते हैं।

श्री जगन्नाथ मंदिर

श्री जगन्नाथ मंदिर चिरिमिरी के ग्राम पंचायत पोंड़ी में स्थित है। यह मन्दिर पुरी (ओडिशा) के जगन्नाथ मंदिर की तर्ज पर बनाया गया है। इस मंदिर का निर्माण ओडिशा के उन्ही कारीगरों से कराया गया है जिन्होंने पुरी के जगन्नाथ मंदिर का निर्माण किया था। श्री जगन्नाथ मंदिर पोंड़ी की पहाड़ी पर स्थित होने के कारण भक्तों के लिए आकर्षण का केंद्र है। मंदिर परिसर में शिव मंदिर भी स्थित है। मंदिर परिसर से

चिरिमिरी की सुंदरता देखते ही बनती है।

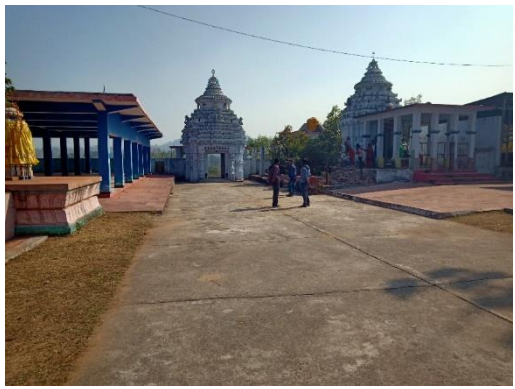

जगन्नाथ मंदिर परिसर में प्रत्येक वर्ष महाशिवरात्रि के दिन से तीन दिन तक विशाल मेले का आयोजन किया जाता है। मेले का केंद्रबिंदु जगन्नाथ स्वामी का मंदिर है। मेला कई प्रकार के झूलों, मिठाई, खिलौनों आदि से भरा होता है। विशेष बात यह है कि मेले में आये भक्तो के लिए श्री जगन्नाथ मंदिर ट्रस्ट की ओर से विशाल भंडारा कराया जाता है ताकि भक्त भगवान जगन्नाथ स्वामी के दर्शन के साथ मेले का पूरा लुफ्त उठा सकें। शाम से शुरू होकर यह मेला पूरी रात चलता है।

कोयला खदान

छत्तीसगढ़ को भौगोलिक रूप से पांच भू भागों में बांटा गया है जिनमे से एक गोंडवाना है। गोंडवाना क्षेत्र कोयले की प्रचुरता के लिए जाना जाता है। चिरिमिरी गोंडवाना क्षेत्र में आता है अतः यहाँ कोयले का प्रचुर भंडार उपलब्ध है। ब्रिटिश शासन के दौरान अंग्रेजों ने चिरिमिरी को कोयला उत्खनन हेतु चिन्हित किया और 1930 ई में कोयला खदानों का कार्य प्रारंभ हुआ। परन्तु कोयला उत्पादन 1932 ई में शुरू हुआ। वर्तमान में

चिरिमिरी के कोयले का उत्पादन भारत की मिनी रत्न कंपनी कोल इंडिया लिमिटेड की शाखा SECL द्वारा किया जा रहा है जिसका क्षेत्रीय कार्यालय बिलासपुर (छत्तीसगढ़) में स्थित है।

कोयला उत्खनन का कार्य अंडर ग्राउंड माइंस एवं ओपन कास्ट से

किया जा रहा है। यहाँ हजारों कर्मचारी अपनी जान जोखिम में डाल कर देश के आर्थिक विकास में योगदान दे रहे हैं। कोयला खदानों का भ्रमण कर श्रमिकों के योगदान एवं प्रकृति के वरदान को समझा जा सकता है। चिरिमिरी में कोयला उत्खनन के लिए आठ कॉलरीयां हैं- हल्दी बाड़ी, कुरासिया, बरतुंगा, सोनामनी, डोमनहिल, गेल्हापानी, कोरिया और पोंड़ी। हल्दी बाड़ी चिरिमिरी का हृदय स्थल है। डोमनहिल में केंद्रीय विद्यालय स्थित है। बरतुंगा में DAV विद्यालय स्थित

है तथा क़ुरासिया में ओपन कास्ट है।

नीलम सरोवर पार्क

नगर पालिका निगम चिरिमिरी द्वारा निर्मित यह पार्क नगर पालिका निगम कार्यालय के समीप स्थित है। प्राकृतिक सौंदर्य के बीच पार्क सौंदर्य का कीर्तिमान स्थापित करता है। पार्क में लगे विभिन्न प्रजाति के पौधे, पुष्प और वृक्ष पर्यटकों को सीधे चिरिमिरी के

प्राकृतिक वातावरण से जोड़ते हैं। पार्क के प्रत्येक स्थान पर स्पीकर लगे है जिससे निकलने वाला मधुर संगीत मन को मोह लेता है। पार्क का प्रमुख आकर्षण का केंद्र डांसिंग वाटर फाउंटेन है जो संगीत पर विभिन्न रंगों के साथ डांस करता है और ऐसा लगता है कि आसमान की उचाईयों को छूती यह फाउंटेन मानो झूम रही हो।

पार्क में एक सरोवर है जिसके नाम पर ही पार्क का नाम नीलम सरोवर पार्क रखा गया है, जिस पर लाइफ जैकेट के साथ पर्यटक बोटिंग का

लुफ्त उठाते हैं। चिरिमिरी अपनी स्वच्छता के लिए जाना जाता है अतः पार्क में आपको इसकी मिसाल देखने को मिलेगी। वैसे तो यह पार्क प्रतिदिन खुला रहता है पर शानिवार और रविवार के दिन अथवा किसी पर्व पर बहुत अधिक पर्यटक आते हैं। कोई पर्व हो या त्योहार, जन्मदिन हो या सालगिरह यहां लोग अपने दिन को यादगार बनाना चाहते हैं।

दशहरा

चिरिमिरी में प्रत्येक वर्ष नवरात्रि के अवसर पर दुर्गा पूजा बहुत धूम धाम से मनाई जाती है। प्रत्येक शाम को माँ दुर्गा की आरती के साथ लोगों की भीड़ सड़को को जैसे अधिग्रहित कर लेती है। प्रत्येक पंडाल में प्रसाद औऱ भोग वितरण किया जाता है ताकि लोग भूखे ना रहें और सभी जगह जाकर माँ दुर्गा का दर्शन कर सकें। माँ दुर्गा के दर्शन के साथ ही लोग दुर्गा पंडालो की सजावट देखते हैं। प्रत्येक स्थान का दुर्गा पंडाल अलग-अलग

थीम पर बना होता है। प्रत्येक स्थान की दुर्गा पंडाल समिति अपने दुर्गा पंडाल को आकर्षक दिखाने की कोशिश करती है। इन दुर्गा पंडालो का निरीक्षण कर प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार की घोषणा दशहरे के दिन रावण दहन के बाद गांधी मैदान में की जाती है। प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त पंडाल समिति दशहरे के बाद एक दिन निश्चित कर पुरस्कार प्रदर्शन के लिए रैलियां निकालते हैं।

दशहरे के दिन दुर्गा प्रतिमा का विसर्जन बड़ी धूमधाम से किया जाता है। रावण दहन का आयोजन प्रत्येक वर्ष गाँधी मैदान (छोटी बाजार), चिरिमिरी में किया जाता है, जहाँ चिरमिरी की लगभग 30000-40000 आबादी रावण दहन देखने आती है। गांधी मैदान

में आयोजकों के द्वारा रंगारंग कार्यक्रम आयोजित किया जाता है। बॉलीवुड औऱ छोलीबुड के कलाकार अपनी प्रस्तुति देते हैं। मैदान में ही मीना बाजार लगा होता जिसमे लोग कई प्रकार के झूले झूलते हैं और रात भर रंगारंग कार्यक्रम देखते हैं। यह दिन बहुत ही यादगार होता है।

माता महामाया मन्दिर

चिरिमिरी से 21 किलोमीटर दूर जनपद पंचायत खड़गवां के ग्राम पंचायत रतनपुर में माता महामाया मन्दिर स्थित है। यह मंदिर कलचुरी कालीन है। मंदिर परिसर में ही शिव मंदिर, मां काली मंदिर और हनुमान मंदिर हैं। माता महामाया मंदिर से लगा हुआ तालाब है।

प्रत्येक वर्ष चैत्र नवरात्रि के अवसर पर महामाया मंदिर में पूजा अर्चना की जाती है एवं मंदिर के सामने मैदान पर भव्य मेले का आयोजन

किया जाता है। नवरात्रि के अवसर पर भक्तों द्वारा तेल व घी के ज्योत जलाये जाते हैं।

ज्योत कक्ष में माता की त्रिशूल है। नवरात्रि में प्रत्येक सुबह-शाम माता की आरती के दौरान नगाड़े की आवाज मंत्रमुग्ध कर देती है। कई लोग मंदिर में शादी और नव वाहन का पूजा भी कराने आते है।

शासकीय लाहिड़ी स्नातकोत्तर महाविद्यालय

शासकीय लाहिड़ी पी.जी. कॉलेज चिरिमिरी के बड़ाबाजार मे स्थित है। कॉलेज की स्थापना 1953 ई. में विभुति दादू लाहिड़ी के प्रयास से की गई थी। लाहिड़ी पी. जी. कॉलेज को छत्तीसगढ़ का द्वितीय

पुराना कॉलेज होने की ख्याति प्राप्त है। यह कॉलेज राजकुमार कॉलेज, रायपुर के बाद छत्तीगसढ़ में स्थापित दूसरा महाविद्यालय है। ''तमसो मा ज्योतिर्गमय'' महाविद्यालय का आदर्श वाक्य है। यह कॉलेज NAAC से C ग्रैड के साथ मान्यता प्राप्त है। प्रारंभ में यह कॉलेज गुरुघासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर से संबद्ध था जो कि वर्तमान में राज्य का एकमात्र केंद्रीय विश्वविद्यालय है। सन 2008 में सरगुजा विश्विद्यालय अम्बिकापुर की स्थापना के बाद यह कॉलेज इससे संबद्ध हो गया। वर्तमान में

सरगुजा विश्विद्यालय का नाम संत गहिरा गुरु विश्विद्यालय, अम्बिकापुर, छत्तीगसढ़ है।

लाहिड़ी महाविद्यालय की प्राचार्य श्रीमती डॉ आरती तिवारी के सहयोग एवं हिंदी विभाग के अध्यक्ष श्री डॉ रामकिंकर पाण्डे के तत्वावधान से फरवरी 2015 में **हिंदी साहित्य में किसान** विषय पर **राष्ट्रीय शोध संगोष्टि** का आयोजन किया गया था जिसमें देश भर के प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों से प्रोफेसर और लेखक उपस्थित हुए थे। तीन दिन चली इस संगोष्टि में उपस्थित बुध्दिजीवियों ने देश में किसानों की दशा एवं सहित्य में किसानों के स्थान पर गहन चर्चा की और किसान की स्थिति में सुधार हेतु अपने सुझाव/विचार

रखे। यह समय महाविद्यालय के लिये स्वर्णिम अवसर था जब देश भर से बुध्दिजीवी महाविद्यालय में उपस्थित थे।

सरभोक्का जलाशय

सरभोका जलाशय चिरिमिरी से 10 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। नगर निगम, चिरिमिरी की आबादी को सरभोका जलाशय से ही पीने हेतु जल की आपूर्ति करता है। इस विशाल जलाशय में विभिन्न प्रकार की मछलियां पाई जाती है। जलाशय में मछली पालन किया जाता है। ग्राम सरभोका पूर्णतया कृषि पर आधारित है। सिंचाई हेतु जल सरभोका जलाशय से ही प्राप्त होता है। जलाशय के निकट ही अभेद्य आश्रम है। लहलहाते खेतों

के बीच और मुख्य सड़क के किनारे यह आश्रम अद्भुत दिखाई देती है।

बहरूपिया प्रतियोगिता

चिरमिरी में प्रत्येक नव वर्ष में नव हर्षोल्लास उत्साह उमंग के साथ प्राचीन विरासत बहुरूपिया लोक कला को संजोए रखने और कला को निखारने के लिए तथा प्रतिभागियों को मंच प्रदान करने के उद्देश्य से, उन्हें सम्मानित करके स्वच्छ-स्वथ्य मनोरंजन के साथ अनेकता में एकता के भाव से सभ्य समाज की परिकल्पना हेतु, यूथ क्लब चिरमिरी द्वारा जनवरी माह में बहुरूपिया

प्रतियोगिता का भव्य आयोजन प्रत्येक वर्ष किया जाता है। यूथ क्लब चिरमिरी द्वारा विगत 5 वर्षों से बहरूपिया प्रतियोगिता का

भव्य आयोजन सफलतापूर्वक आयोजित किया जा रहा है जो अब

बहरूपिया महोत्सव के नाम से पूरे छत्तीसगढ़ में जाना जाता है।

उक्त कार्यक्रम में छत्तीसगढ़ तथा पड़ोसी राज्य मध्य प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों से कलाकार काफी संख्या में भाग लेकर चिरमिरी के साथ सम्पूर्ण कोरिया जिला साथ ही आसपास के क्षेत्रों के हजारों हजारों की संख्या में प्रत्यक्ष दर्शकों प्रतिभागी भरपूर मनोरंजन करते हैं। प्रतिभागी बहुरूपिया के वेश में हल्दीबाड़ी के मुख्य मार्ग पर अपनी कला का उत्कृष्ट प्रदर्शन करते है। प्रतिभागियो द्वारा हर वर्ष अनोखे ड्रेस मुद्राओं में अपनी

कला का प्रदर्शन कर स्वस्थ्य मनोरंजन कर सामाजिक राष्ट्रीय हित मे, अनेकता में एकता, स्वास्थ्य, शिक्षा, शौर्य, पराक्रम, वीरता, सौहार्दपूर्ण वातावरण का संदेश के साथ समाज मे फैली

कुरूतियो पर भी व्यंग्यात्मक तरीके से प्रदर्शन किए जाते हैं।

तुर्रा

तुर्रा पीने योग्य पानी के लिए एक प्राकृतिक स्त्रोत है। वास्तव में यह

जमीन के नीचे से निकलने वाला पानी होता है। चिरिमिरी के कई स्थानों में तुर्रा पाया जाता है। चिरिमिरी के घने वन धरती में जल संग्रहण करते है। यही जल जमीन से निकलते है। तुर्रा से 24 घंटे, साल के 12 माह जमीन से पानी निकलता रहता है। तुर्रा दशको से चिरिमिरी के जनमानस के लिए पेय जल का प्राकृतिक स्रोत रहा है। अभी भी ग्रीष्म में जब कभी पीने के पानी की किल्लत होती है तो तुर्रा इसकी पूर्ति करता है। चिरिमिरी कि अधिकांश आबादी तुर्रा पर निर्भर है। तुर्रा के महत्व को समझते हुए

नगर पालिका निगम चिरिमिरी द्वारा सभी जगह के तुर्रा का संरक्षण किया जा रहा है।

लेखक के बारे में

सुनील यादव एक युवा हैं। आप चिरिमिरी में ही निवासरत है। आप अपना अध्ययन कार्य पूर्ण कर 7 वर्षों से अध्यापन कार्य से जुड़े हुए हैं। आप विभिन्न प्रतियोगी

परीक्षाओं में वरीयता सूची में स्थान प्राप्त कर चुके हैं।

आप "हिंदी साहित्य में किसान" विषय पर सन 2015 में आयोजित राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी में सम्मिलित हो चुके हैं। आप सन 2017 में दैनिक भास्कर की मालामाल वीकली प्रतियोगिता में भारत में 8 वे स्थान पर थे जिसके पुरस्कार स्वरूप आपको दैनिक भास्कर की ओर से वीडियोकॉन का रेफ्रिजरेटर दिया गया था। आपके उत्कृष्ट कार्यो को प्रतिष्ठित दैनिक समाचार पत्रों एवं वेब मीडिया में खबर बनाया गया है।